MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR

SUBJECT – INDIAN ART & TREASURES (THEORY)

CLASS – BA,B.SC, B.COM, BCA (2 SEMESTER)

SESSION- 2024-25

Unit-1 Visual Art (Indian Art & treasures 1)
(विजुअल आर्ट) ⇒ Visual Art.)

Visual :-> (विजुअल) :-> दृश्य, चित्रात्मक, चित्रण, चित्र, विडियो!
Art :-> (आर्ट) :-> कला, अनुभव, भाव!

विजुअल शब्द प्राचीनतम् शब्द है जिसका अर्थ है –
— विशाल, विस्तृत, दृश्या, चित्रावली!

विजुअल आर्ट

परिचय :-> वह दृश्य कला (विजुअल आर्ट) दृष्टि के माध्यम से अनुभव की जाती है! ~~जिन्हे~~ देखकर हम अनुभव के माध्यम से कला की जानकारी प्राप्त करते है! विजुअल आर्ट कई प्रकार की होती है। तथा विजुअल आर्ट दृश्य कला का महत्वपूर्ण अंग है।

जैसे :-

(1) चित्रकला
(2) मूर्तिकला
(3) फोटोग्राफी
(4) विडियोग्राफी
(5) फिल्म
(6) इंस्टॉलेशन आर्ट

(1) चित्रकला :-> चित्र के निर्माण पूर्ण होने के बाद हमें चित्र सुन्दर लगता है। और हृदय से खुश हो जाते हैं।

(2) मूर्तिकला :-> जब कोई मूर्तिकार चित्र की मूर्ति को आकार में ढालता है! तो उसे ~~आश्चर्य~~ आश्चर्य से देखते है। और मूर्तिकला पूर्ण करने पर अलग प्रभावभाव दिखाई देता है।

Scanned with OKEN Scanner

③ **फोटोग्राफी** :- फोटोग्राफी 1 कला है जिसमे स्थायी रूप से व्यक्ति का फोटो निकाला जाता है। यह विधि वास्तविकता को प्रदर्शित करती है।

④ **विडियोग्राफी** :- विडियो बनाने की कला, रिकॉर्डिंग, मिक्सिंग पिक्चर की कला ही विडियोग्राफी कहलाती है। जिसमें रचनात्मक प्रक्रिया से Effect or transitions की मदद से वीडियो को अच्छा बनाया जाता है।

विजुअल आर्ट का महत्व :-

1. संचार :- दृश्यकला संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।
2. अभिव्यक्ति :- दृश्य कला अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण अंग है।
3. संस्कृति :- दृश्य कला संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

-* कला के तत्व व सिद्धांत *-

परिचय :- कला के तत्व व सिद्धांत मूलभूत घटक है, जो किसी भी कला कृति को बनाने में मदद करते है। ये तत्व (घटक) व सिद्धांत कलाकारों को अपनी कला को व्यवस्थित और अर्थपूर्ण बनाने में सहायक होते है।

कला के तत्व (घटक)

1. रंग
2. आकार
3. रेखा
4. बनावट
5. आकृति
6. स्थान

कला के सिद्धांत

1. संतुलन
2. अनुपात
3. एकता
4. विविधता
5. तनाव
6. गति
7. प्रकाश व छाया

Scanned with OKEN Scanner

कला के तत्व (घटक)

1) **रेखा** :-> एक बिंदु को दूसरी बिंदु से मिलाप करने वाली रेखा ही रेखाओं का निर्माण करते है!

Ex:->

2) **आकार** :-> किसी वस्तु का सम्पूर्ण क्षेत्र ही आकार कहलाता है। जैसे वृत्त, वर्ग या त्रिभुज का अपना ढाँचा या आकार है।

Ex:->

3) **रंग** :-> रंगों का प्रयोग वस्तु या चित्रण की विधि पर अपना महत्वपूर्ण अंग होता है! चित्रण में अपनी प्रकाशा रखता है।

4) **बनावट** :-> एक सतह की बनावट ही उसका असलीपन अहसास कराती है। खुरदरी, चिकनी, चमकदार, उभरी आदि किसी तरह बनावट का विवरण देता है।

5) **स्थान** :-> चित्र के बीच-2 खाली स्थान को या फिर चित्र मे बनी स्पेश (space) जगह होती है उसे स्थान कहते है!

6) **मान** :-> यह प्रकाश व उधेरे के बीच का अंतर होता है। जो रंग की चमक व गहराई को दर्शाता है। उसे छाया जैसे रिक्त स्थान या मान कहते है।

Scanned with OKEN Scanner

कला का सिद्धांत-

① **संतुलन** :-> कलाकृति के निर्माण में सतुंलन की आकृतियों को दर्शाते हैं। चित्र में सतुंलन ~~प्रभावित~~ प्रभावित करता है। —

② **अनुपात** :-> यह कलाकृति में तत्वों के बीच संबंध है। जो आकार या संख्या के संदर्भ हो सकता है। दो वस्तुओं या चित्रण का बराबर या संख्या एक जैसी होती है।

③ **एकता** :-> चित्र की एकरूपता होती है जो सुंदर बनाने में सहायक बनाता है, तथा पूर्ण करके चित्र भावपूर्ण लगने लगते है।

④ **विविधता** :-> यह चित्रण विधी में आकर्षण का माध्यम है जो अलग स्थान प्राप्त कराने में चित्रण की महानता दर्शाता है।

⑤ **प्रकाश व छाया** :-> चित्रण में प्रकाश व छाया का बहुत बड़ा महत्व है। क्योंकि चित्र की छाया से उसकी असलीपन का ~~प्र~~ पता चलता है। और प्रकाश सें चित्र की सपष्टता दर्शाती है।

Scanned with OKEN Scanner

Unit -2

भारतीय कला परम्पराएँ

भारतीय कला परम्पराएँ विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों में विकसित हुई हैं, जिनमें भारतीय कला की क्षेत्रीय परम्पराएँ भी जो भारतीय कला की प्रदर्शनी अंतराष्ट्रीय स्तर पर करती हैं।

नोट :→ भारतीय कला परम्पराएँ संक्षिप्त हैं।

प्राचीन कला :- सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2500 ईसा पूर्व) में कला के शुरुआती उदाहरण दिखाई देते हैं; जिनमें मिट्टी के बर्तन मुहरें व अन्य कलाकृतियाँ शामिल हैं।

विभिन्न कला शैली :- भारतीय कला में विभिन्न शैलियाँ हैं। जैसे मौर्य कला, गुप्त कला और मुगल कला, जो अलग समय और क्षेत्रों में विकसित हुई! जैसे :→ राजपूत कला शैली भी अत्यधिक प्रचलित हुई थी।

चित्रकला :→ भारतीय चित्रकला अत्यधिक प्रभावशाली रही तथा चित्रकला में भारतीय शासकों को सहायक बनाने अहम भूमिका निभाई। भारतीय चित्रकला विभिन्न प्रकार की शैली है, जैसे कि - अजंता गुफाओं के चित्र, मुगल चित्रकला व आधुनिक चित्रकला (भारतीय कला परम्पराएँ) है।

स्थापत्य कला :- भारतीय स्थापत्य कला व वास्तुकला है जो भवन, महल, किले, मंदिर, मकबरा, ईमारत का डिजाइन होता है। जिसमें समानंतर आधार पर कारीगर की कुशलता से तकनीकी आधार को बनाया जाता है,

उदाहरण ⇒ लालकिला, ताजमहल, प्रेममंदिर, राम मंदिर (अयोध्या) आदि वास्तुकला है।

Scanned with OKEN Scanner

हस्तशिल्प कलाएँ :- हस्तशिल्प कलाएँ वह कला है जो कुशल कारीगर या बुनकर द्वारा बनाई जाती है।
उदाहरण :- मिट्टी के बर्तन, कालीन, वस्त्र-सज्जा, धातु के काम आदि संस्कृति प्रदर्शित कलाएँ है।

लोककला :- लोक कलाएँ घर में स्त्रीयों द्वारा की जाने वाली सामाजिक कलाएँ है जो लोक कला परम्परा को दर्शाती है।
उदाहरण के तौर से जैसे :- मधुबनी पेंटिंग, वारली पेन्टिंग, और पट्ट चित्र जो ग्रामीण जीवन व परम्परा दर्शाते है।

— धार्मिक विषय, पौराणिक विषय व कलारूप और शैली —

भारतीय कला में परम्परा व पौराणिक पर ध्यान देते हुऐ, हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन धर्म के आधार पर चित्रण बताया गया है।

धार्मिक कलाएँ => **हिंदू :-** भगवान के चित्र (शिव, गणेश, राम, कृष्ण) आदि इसके अलावा रामायण, महाभारत, धार्मिक कार्यक्रम आदि।

बौद्ध धर्म :- बौद्ध के चित्र, बौद्ध मंदिर, स्तूपो व जीवन शैली (बौद्ध) व बौद्ध जीवन की कहानी आदि दी गई है।

जैन धर्म :- जैन कला में जैन तीर्थकरों तथा ब्रह्मांड ज्ञान-विज्ञान चित्र प्राप्त हुऐ है।

ईस्लाम धर्म :- ईस्लाम में वास्तुकला व कॉलिग्राफी व शूरवीर बादशाहों का चित्रण मिला है।

Scanned with OKEN Scanner

* भारतीय कला प्रमुख विषय * -

भारतीय कला की विषय सामान्यत भारतीय धार्मिक, प्रकृति, मानव जीवन, राजाओं, सामाजिक, पौराणिक कथाएं इत्यादि प्रमुख तौर तरीके है।

① **धार्मिक और आध्यात्मिक विषय** :- भारतीय कला में मुख्य विषय धार्मिक व आध्यात्मिक है। जिसमें हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध व जैन धर्म तथा इन धर्मों के देव-देवताओं, अवतारों और प्रतीकों का चित्रण है।

② **प्रकृति और जीवन** :- भारतीय कला में प्रकृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया जाता है। इसमें पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी और मानव जीवन के विभिन्न दृश्य शामिल है।

③ **राजाओं और शासकों** :- भारतीय कला में राजाओं और शासकों के जीवन का चित्रण है। इसमें दरबार, युद्ध, शिकार व अन्य गतिविधी का वर्णन मिलता है।

④ **सामाजिक व सांस्कृतिक विषय** :- भारतीय कला में सामाजिक व सांस्कृतिक विषयों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें विभिन्न समुदायों के प्रति उनके रिती-रिवाजों, त्योहार व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों का चित्रण किया जाता है।

⑤ **मिथक व पौराणिक कथाएं** :- भारतीय कला में मिथक व पौराणिक कथाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें विभिन्न देवी-देवताओं, असुरों और अन्य पौराणिक पात्रों की कथाएँ और चित्रण किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

UNIT-3

अमृता शेरगिल की कला

अमृता शेरगिल की कला ने सैयद हैदर रज़ा से लेकर अर्पिता सिंह तक जैसी भारतीय कलाकारों की पीढ़ियों को प्रभावित किया है और महिलाओं की दुर्दशा के उनके चित्रण ने उनकी कला को भारत और विदेशों में बड़े पैमाने पर महिलाओं के लिए एक प्रकाशस्तम्भ बना दिया है। भारत सरकार ने उनकी कृतियों को राष्ट्रीय कला कोष घोषित किया है और उनमें से अधिकांश को नई दिल्ली के राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय दीर्घा में रखा गया है। [4] उनकी कुछ चित्र लाहौर संग्रहालय में भी हैं। 1978 में भारतीय डाक द्वारा उनकी चित्र "हिल वुमन" को दर्शाते हुए एक डाक टिकट जारी किया गया था और लुटियंस दिल्ली में उनके नाम पर **अमृता शेरगिल** मार्ग है। उनके काम को भारतीय संस्कृति के लिए इतना महत्वपूर्ण माना जाता है कि जब इसे भारत में बेचा जाता है, तो भारत सरकार ने यह निर्धारित किया है कि कला को देश में रहना चाहिए - उसके दस से भी कम चित्र विश्व स्तर पर बेचे गए हैं। 2006 में, नई दिल्ली की एक नीलामी में उनकी चित्र "विलेज सीन" 6.9 करोड़ में बिकी, जो उस समय भारत में एक चित्र के लिए दी जाने वाली सबसे अधिक राशि थी।

Scanned with OKEN Scanner

मधुबनी चित्रकला

मधुबनी चित्रकला, जिसे मिथिला चित्रकला भी कहते हैं, बिहार के मिथिला क्षेत्र की एक प्रमुख कला परंपरा है। यह चित्रकला मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा बनाई जाती है और इसमें प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है।इस कला का आरंभ **1960** में मधुबनी जिले के एक साध्वी, **स्वर्गीय महासुन्दरी देवी** के साथ हुआ था जीनोने रंगीन चित्रकला का परिचय दिया। इसके बाद से ही महिलाएं इस कला को अपनाने लगीं और आज यह कला पूरी दुनिया में मशहूर है।

मधुबनी चित्रकला के विशेषता में एक बात यह है कि इसमें लकड़ी के टुकड़ों पर बनाए जाते हैं। मुख्य रूप से खुदाई की जाने वाली रंगों में सामंजस्य, लाल, हरा, नीला, और काला होते हैं जो इस कला को विशेषता प्रदान करते हैं।

इतिहास

माना जाता है ये चित्र राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाए थे। मिथिला क्षेत्र के कई गांवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये पेंटिंग गांवों की मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर पेपर के कैनवास पर खूब बनाया जाता है। समय के साथ साथ चित्रकार कि इस विधा में पासवान जाति के समुदाय के लोगों द्वारा राजा शैलेश के जीवन वृतान्त का चित्रण भी किया जाने लगा। इस समुदाय के लोग राजा सैलेश को अपने देवता के रूप में पूजते भी हैं।

Scanned with OKEN Scanner

गोंड कलाकृतियाँ

भारत की समृद्ध कला परंपरा में लोक कलाओं का गहरा रंग है। काश्मीर से कन्या कुमारी तक इस कला की अमरबेल फैली हुई है। कला दीर्घा के इस स्तंभ में हम आपको लोक कला के विभिन्न रूपों की जानकारी देते हैं। इस अंक में प्रस्तुत है गोंड कलाकृतियों के विषय में -

---

मध्यप्रदेश के मण्डल जिले की प्रसिद्ध जनजातियों में से एक 'गोंड' द्वारा बानायी गयी चित्र कला की विशिष्ट कलाशैली को गोंड चित्रकला के नाम से जाना जाता है। लम्बाई और चौड़ाई केवल इन दो आयामों वाली ये कलाकृतियाँ खुले हाथ बनायी जाती हैं जो इनका जीवन दर्शन प्रदर्शित करती हैं। गहराई, जो किसी भी चित्र का तीसरा आयाम मानी गयी है, हर लोककला शैली की तरह इसमें भी सदा लुप्त रहती है जो लोक कलाओं के कलाकारों की सादगी और सरलता की परिचायक है।

गोंड कलाकृतियाँ इस जनजाति के स्वभाव और रहन सहन की खुली किताब हैं। इनसे गोंड प्रजाति के रहन सहन और स्वभाव का अच्छा परिचय मिलता है। कभी तो ये कलाकृतियाँ यह बताती हैं कि कलाकारों की कल्पना कितनी रंगीन हो सकती है और कभी यह कि प्रकृति के सबसे फीके चित्रों को भी ये अपने रंगों से कितना जीवंत बना सकते हैं।

उदाहरण के लिये वे छिपकली या ऐसे ही अकलात्मक समझे जाने वाले जंतुओं को तीखे रंगों से रंग कर चित्रकला के सुंदर नमूनों में परिवर्तित कर देते हैं। यदि हम इसका दार्शनिक पक्ष देखें तो यह उनकी प्रकृति को भी रंग देने की उत्कट भावना को प्रदर्शित करता है।

उनके द्वारा बनाए गए चित्रों के आकार शायद ही कभी एक रंग के होते हैं । कभी उनमें धारियाँ डाली जाती हैं कभी उन्हें छोटी छोटी बिन्दियों से सजाया जाता है और कभी उन्हें किसी अन्य ज्यामितीय नमूने से भरा जाता है। ये कलाकृतियाँ हस्त निर्मित कागज़ पर पोस्टर रंगों से बनाई जाती हैं। चित्रों की विषयवस्तु प्राकृतिक प्रतिवेश से या उनके दैनिक जीवन की घटनाओं से ली जाती है। फसल, खेत या परिवारिक समारोह लगभग सभी कुछ उनके चित्रफलक पर अपना सौन्दर्य बिखेरता है। कागज़ पर चित्रकला के अतिरिक्त गोंड जनजाति स्वयं को भितिचित्रण और तल चित्रण में भी व्यस्त रखती है।

Scanned with OKEN Scanner

वारली आर्ट

वारली एक प्रकार की जनजाति है। जो महाराष्ट्र राज्य के थाने जिले के धानु, तलासरी एवं ज्वाहर तालुकाज में मुख्यत: दूसरी जनजातियों के साथ पायी जाती है। ये बहुत मेहनती और कृषि प्रदान लोग होते है। जो बास, लकडी, घास एवं मिट्टी से बनी टाइलस से बनी झोपडियों में रहतें है। झोपडियों की दीवारे लाल काडू मिट्टि एवं बांस से बांध कर बनाई जाती है, दीवारो को पहले लाल मिट्टि से लेपा जाता है उसके बाद ऊपर से गाय के गोबर से लिपाई की जाती है। वारली चित्रकला एक
प्राचीन भारतीय कला है जो की महाराष्ट्र की एक जनजाति वारली द्वारा बनाई जाती है। और यह कला उनके जीवन के मूल सिद्धांतो को प्रस्तुत करती है। इन चित्रों में मुख्यतः फसल पैदावार ऋतु, शादी, उत्सव, जन्म और धार्मिकता को दर्शाया जाता है। यह कला वारली जनजाति के सरल जीवन को भी दर्शाती है।
वारली कलाओं के प्रमुख विषयों में शादी का बड़ा स्थान हैं।
शादी के चित्रों में देव, पलघाट, पक्षी, पेड़, पुरुष और महिलायें साथ में नाचते हुए दर्शाए जाते है।

Scanned with OKEN Scanner

पहाड़ी चित्रकला

पहाड़ी चित्रकला भारत में हिमालय की तराई के स्वतंत्र राज्यों में विकसित पुस्तकीय चित्रण शैली है। पहाड़ी चित्रकला शैली दो सुस्पष्ट भिन्न शैलियों, साहसिक और गहन बशोली और नाज़ुक भावपूर्ण कांगडा से निर्मित है। पहाड़ी चित्रकला, अवधारणा तथा भावनाओं की दृष्टि से राजस्थानी चित्रकला से नज़दीकी संबंध रखती है तथा गोपाल कृष्ण की किंवदंतियों के चित्रण की अभिरुचि में यह उत्तर भारतीय मैदानों की राजपूत चित्रकला से मेल खाती है। इसके प्राचीनतम ज्ञात चित्र (1690) बशोली उपशैली में हैं। जो 18वीं शताब्दी के मध्य तक कई केंद्रों पर जारी थी। इसका स्थान कभी-कभी पूर्व कांगड़ा कहलाने वाली एक संक्रमणकारी शैली ने लिया, जो लगभग 1740 से 1775 तक रही। 18वीं शताब्दी के मध्य काल के दौरान परवर्ती मुग़ल शैली में प्रशिक्षत कई कलाकार परिवार नए संरक्षकों तथा सुरक्षित जीवन की खोज में दिल्ली से पहाड़ियों की और पलायन कर गये थे। नई कांगड़ा शैली में, जो बेशोली शैली को पूर्णतया अस्वीकार करती प्रतीत होती है, परवर्ती मुग़ल कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इस शैली में रंग हल्के होते हैं, भू-परिदृश्य तथा वातावरण सामान्यत: अधिक नैसर्गिक होते हैं और रेखाएं ज़्यादा सूक्ष्म तथा महीन होती हैं।

Scanned with OKEN Scanner

UNIT-1

मुगल चित्रकला

मुगल चित्रकला शैली का विकास चित्रकला की स्वदेशी भारतीय शैली और फारसी चित्रकला की सफविद शैली के एक उचित संश्लेषण के परिणामस्वरुप हुआ था। इस शैली की शुरूआत बाबर (1526-30) से मानी जाती है। उसे फारसी कलाकार बिहजाद को संरक्षण देने वाला कहा जाता है। अकबर को चित्रकला और अपने दस्तावेजों के सुलेखन के लिए समर्पित एक पूरे विभाग जीसे "तस्वीरखाना"के रूप में औपचारिक कलात्मक स्टूडियो बनाया। जहाँ कलाकारों को वेतन पर रखा गया। अकबर चित्रकला को अध्ययन और मनोरंजन के साधन के रूप में देखता था। अकबर के समय में फ़ारस का प्रसिद्ध चित्रकार अब्दुस्समद भारत आया और यहाँ मुगल चित्रकला में सूक्ष्मचित्रण (मिनिएचर पेंटिंग) के क्षेत्र में कार्य किया।

मुगल चित्रकला जहांगीर के शासनकाल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गयी । वह स्वभाव से प्रकृतिवादी था और वनस्पतियों और जीवों , यानी पक्षियों , पशुओं वृक्षों और फूलों के चित्रों को प्राथमिकता देता था। उसने "छविचित्र" में प्रकृतिवाद लाने पर बल दिया । इस अवधि में विकसित होने वाली एक अनूठी प्रवृत्ति चित्रों के चारों ओर अलंकृत किनारों/बार्डर की थी । ये कभी कभी उतने व्यापक होते थे जितना कि स्वयं जहांगीर को भी एक अच्छा कलाकार माना गया चित्र जाता है और उसकी अपनी स्वयं की निजी कार्यशाला थी। उसकी चित्रशाला में अधिकांशतः लघुचित्रों (मिनिएचर) की रचना की गई और इनमें से सबसे प्रसिद्ध जेबरा, शतुर्मुर्ग और मर्गे के प्राकृतिक चित्र थे। उसके काल के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में से एक उस्ताद मंसूर था। उस्ताद मंसूर जटिल से जटिल चेहरे की आकृतियां भी उतारने में विशेषज्ञ था। अयार-ई-दानिश नाम पुस्तक उनके शासनकाल के दौरान लिखी गई थी।

शाहजहां पिता और दादा विरूद्ध कृत्रिम तत्वों की रचना पसंद करता था और युरोपीय प्रभाव से प्रेरित था। वह पूर्व काल के आरेखन और चित्रण की तकनीक में भी परिवर्तन लाया। वह आरेखन के लिए लकड़ी के कोयले के उपयोग से दूर रहा और पेंसिल का उपयोग करके आरेखन और रेखाचित्रण करने के लिए कलाकारों को प्रोत्साहित करताउसने चित्रों में सोने और चांदी का उपयोग बढ़ाने का आदेश दिया। वह अपने पर्ववर्तियों की तुलना में चमकीले रंग अधिक पसंद करता था । इसलिए हम कह सकते हैं कि उसके शासनकाल के दौरान मुगल चित्रशाला का विस्तार हुआ लेकिन शैली और तकनीक में बहुत कुछ परिवर्तन भी आया ।

Scanned with OKEN Scanner

राजा रवि वर्मा कि चित्रकला

राजा रवि वर्मा 18वीं सदी के सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक नाम है,,, जिनकी चित्रकारी और कला आज भी लोगों को काफी आकर्षित करती हैं। राजा रवि वर्मा ने अपनी कला के माध्यम से भारतीय संस्कृति को पुनः जीवंत कर दिया था। किसी को भी यह मालूम न था कि आखिर मूर्ति के अलावा भगवान दिखते कैसे होंगे लेकिन राजा रवि वर्मा ने भारतीय संस्कृति को हर तरह से पढ़ा उसे समझा और महाभारत, रामायण तथा उपनिषदों और पौराणिक कथाओं को विस्तार पूर्वक पढ़ने और समझने के बाद खुद में इस तरह उन्हें समाहित कर लिया कि उनके सामने वह पौराणिक पात्र मानो जीवन तो हो गए और उन्होंने उन सभी पात्रों को अपनी कला के माध्यम से चित्रकारी द्वारा अमर कर दिया। राजा रवि वर्मा का नाम आज के 21वीं सदी में भी बहुत ही आदर और सम्मान से लिया जाता है। यदि आप उनकी कला को ध्यान से देखेंगे तो आप समझ पाएंगे कि उनकी कला में भारतीय परंपरा और यूरोप की तकनीकी का बेहद ही उत्कृष्ट मिश्रण पाया जाता है जो की हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रकारी के माध्यम से न केवल राजाओं के लिए काम किया और उनके दरबार की शोभा बढ़ाई बल्कि भगवान की पौराणिक कथाओं के अनुसार ऐसी ऐसी चित्रकारी बनाई जिसके बारे में सामान्य इंसान को सोचना भी मुश्किल था और इसी कला के माध्यम से उन्होंने पौराणिक कथाओं द्वारा भगवान की जीवंत पेंटिंग व चित्रकारी को प्रिंटिंग का सहारा लेते हुए घर-घर पहुंचाया और हर घर को मंदिर बनाया। क्योंकि प्राचीन समय में बहुत सी ऐसी प्रथाएं थी कि कुछ जाति के लोग मंदिरों में प्रवेश नहीं कर सकते थे जिसकी वजह से उन्हें मालूम ही ना था कि आखिर भगवान दीखते कैसे हैं? लेकिन राजा रवि वर्मा ने अपनी चित्रकारी द्वारा लोगों के समक्ष अपनी चित्रकारी द्वारा भगवान की मानो बोलती हुई तस्वीर को प्रदर्शित किया जिसके बाद राजा रवि वर्मा का सम्मान और भी बढ़ गया।

Scanned with OKEN Scanner

अजंता की गुफाएँ चित्रकला

अजंता की गुफाएँ 30 चट्टान-कटी बौद्ध गुफा स्मारक हैं जो दूसरी सदी ईसापूर्व से लेकर लगभग 480 ईस्वी तक के समय की हैं, जो महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित हैं। अजंता की गुफाएँ यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं। बौद्ध धार्मिक कला के महान कृतियों के रूप में विश्व स्तर पर मान्य, इन गुफाओं में पेंटिंग्स और चट्टान-कटी मूर्तियाँ शामिल हैं, जिन्हें प्राचीन भारतीय कला के उत्तम बचे हुए उदाहरणों में से एक माना जाता है, विशेष रूप से ऐसे अभिव्यक्तिपूर्ण पेंटिंग जो भावनाओं को इशारे, मुद्रा और रूप के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं।गुफाएँ दो चरणों में बनाई गईं, पहला चरण दूसरी सदी ईसापूर्व से लगभग शुरू हुआ और दूसरा चरण 400 से 650 ईस्वी के बीच हुआ, पुराने ग्रंथों के अनुसार, या बाद के शोध के अनुसार 460–480 ईस्वी के संक्षिप्त अवधि में।अजंता की गुफाएँ विभिन्न बौद्ध परंपराओं के प्राचीन विहारों और पूजा के हॉल (चैत्या) को 75 मीटर (246 फीट) की चट्टान की दीवार में तराशा गया है। ये गुफाएँ बुद्ध के पिछले जन्मों और पुनर्जन्मों को चित्रित करने वाली पेंटिंग्स भी प्रस्तुत करती हैं,

Scanned with OKEN Scanner

खजुराहो के मंदिर

ऐसा माना जाता है कि भारत में 20 लाख से अधिक हिंदू मंदिर हैं। ये मंदिर भारतीय संस्कृति और जीवन प्रणाली की विविधता को दर्शाते हैं। भारत की मंदिर वास्तुकला में हमेशा एक अंतर्निहित दृष्टिकोण प्रदर्शित होता है। यह दृष्टिकोण, अनुभूति, स्थान, और समय का प्रतिक होता है। हिंदू मंदिरों के निर्माण से संबंधित कला और वास्तुकला शिल्प शास्त्र में अच्छी तरह से परिभाषित है। इसमें नागर या उत्तरी शैली, द्रविड़ या दक्षिणी शैली, और वेसर या मिश्रित शैली नामक भारत की तीन मुख्य मंदिर वास्तुकला शैलियों का उल्लेख है।

नागर शैली की मुख्य विशेषताओं में गर्भगृह, शिखर (वक्रीय मीनार), और मंडप (प्रवेश हॉल) शामिल हैं। नागर शैली का विकास धीरे-धीरे हुआ क्योंकि पहले के मंदिरों में केवल एक ही शिखर हुआ करता था, जबकि बाद के मंदिरों में कई शिखर होते थे और गर्भगृह हमेशा सबसे ऊँचे शिखर के नीचे पाया जाता था।

खजुराहो के मंदिर **नागर शैली के मंदिरों** के अद्भुत उदाहरण हैं क्योंकि इन मंदिरों में एक गर्भगृह, एक संकरा आंतरिक-कक्ष (अंतराल), एक अनुप्रस्थ भाग (महामंडप), अतिरिक्त सभागृह (अर्ध मंडप), एक मंडप या बीच का भाग और एक प्रदक्षिणा-पथ होता है, जिसमें बड़ी खिड़कियों द्वारा प्राकश आता है।

अपने सुशोभनीय मंदिरों के लिए प्रसिद्ध, खजुराहो, चंदेल शासकों द्वारा 900 ईस्वी से 1130 ईस्वी के बीच बनाया गया था। खजुराहो और इसके मंदिरों का पहला उल्लेख **अबू रेहान अल बिरूनी** (1022 ईस्वी) और **इब्न बतूता** (1335 ईस्वी) के वृत्तांतों में मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि ये मंदिर 20 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए थे और 12वीं शताब्दी में यहाँ लगभग 85 मंदिर थे। समय के साथ खजुराहो में मंदिरों की संख्या घटकर आज केवल 20 ही रह गई है।

चंदेल साम्राज्य का, दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक, मध्य भारत पर शासन था। चंदेलों को उनकी कला और वास्तुकला में रुचि के लिए जाना जाता था। हालाँकि वे शैव पंथ के अनुयायी थे, परंतु उनकी वैष्णववाद और जैन धर्म के प्रति भी रुचि बताई गई है।

मंदिरों की नक्काशी मुख्य रूप से हिंदू देवी-देवताओं और पौराणिक कथाओं से संबंधित है। स्थापत्य शैली भी हिंदू परंपराओं के अनुसार है। इनकी विभिन्न कारकों द्वारा पुष्टि की जा सकती है। हिंदू मंदिर के निर्माण की एक प्रमुख विशेषता यह है कि मंदिर का

Scanned with OKEN Scanner

एम.एफ. हुसैन की चित्रकला

एम.एफ. हुसैन (1913-2011) एक भारतीय चित्रकार थे, जिन्हें उनके रंगीन चित्रों के लिए जाना जाता है, जिनमें घोड़े, शहरी परिदृश्य, बॉलीवुड अभिनेत्री माधुरी दीक्षित और नग्न हिंदू देवियों को चित्रित किया गया है। क्यूबिज़्म पर आधारित अपनी शैली का उपयोग करके, उनके अवमाननापूर्ण विषय ने भारत में सेंसरशिप की सीमाओं को बढ़ाया। उन्होंने एक बार कहा, "मुझे लगता है कि आप केवल विवाद के लिए काम नहीं करते हैं, और जब भी आप नई काम करते हैं जो लोगों को समझ में नहीं आता है और वे कहते हैं कि यह विवाद पैदा करने के लिए किया गया है।"

हुसैन का जन्म 17 सितंबर, 1915 को पांधरपुर, भारत में एक धर्मनिरपेक्ष मुस्लिम परिवार में हुआ था। उन्होंने कॉलिग्राफी का अध्ययन किया और फिर मुंबई चले गए, जहां उन्होंने सिनेमा के पोस्टर पेंट करने और खिलौने डिजाइन करने का काम किया। 1953 में, हुसैन पहली बार यूरोप गए, जहां उन्होंने पाब्लो पिकासो, पॉल क्ली और हेनरी मैटिस की कला देखी।

हुसैन को 2006 में निर्वासित होने के लिए मजबूर किया गया था, क्योंकि भारतीय सरकार द्वारा उनके खिलाफ कई मामले दर्ज किए गए थे, जिसमें हिंदू संस्कृति के अपमान का आरोप लगाया गया था। अपने जीवन के शेष समय में, उन्होंने अधिकांश समय कतर और यूनाइटेड किंगडम के बीच बिताया। हुसैन का निधन 9 जून, 2011 को लंदन, यूनाइटेड किंगडम में हुआ था। आज, उनकी कलाकृतियां लॉस एंजिल्स काउंटी संग्रहालय ऑफ आर्ट, मुंबई के नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट और दोहा के नेशनल म्यूजियम ऑफ इस्लामिक आर्ट सहित कई संग्रहालयों में हैं।

Scanned with OKEN Scanner